ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 89-91

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

हिंदी साहित्य के प्रथम इतिहास की वैज्ञानिकता

1. डॉ. राजकुमार उपाध्याय "मणि"
2. रीना मिश्रा "पल्ली"

विभागाध्या– हिन्दी विभाग, जनसम्पर्क अधिकारी, संत गहिरा गुरू विश्वविद्यालय, सरगुजा– अम्बिकापुर (छत्तीसगढ़) भारत।

Received- 10 .02. 2022, Revised- 16 .02 2022, Accepted - 20.02.2022 E-mail: rkumari@gmail.com

सारांशः – *हिंदी साहित्य का अध्ययन करते समय जिस प्रकार हिंदी की प्रथम रचना की जिज्ञासा होती है, ठीक उसी प्रकार हिंदी साहित्य के प्रथम इतिहास की भी जिज्ञासा रहती है। अब तक हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन में अनेकानेक पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं, किन्तु चर्चा में सर्वाधिक आचार्य शुक्ल के द्वारा 1929 ई. में लिखित "हिंदी साहित्य का इतिहास" ही माना जाता है। फिर भी, आचार्य शुक्ल जी से पूर्व और पश्चात् भी अनेक इतिहास ग्रन्थ हैं, जिनका हिंदी साहित्य के विकास और इतिहास लेखन में महती भूमिका है। इसी संदर्भ में आचार्य शुक्ल से पूर्व और 'शिवसिंह सरोज' के बाद लिखित, अधिक महत्वपूर्ण और कुछ व्यवस्थित वैज्ञानिक रीति व साहित्येतिहास लेखन की .ष्टि से लिखा गया डॉ. जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन का 'द माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' (1889 ई.) पहला ग्रन्थ है। प्रचलन में 'द माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' नाम लिया जाता है किन्तु इसका वास्तविक नाम 'द माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ नादर्न हिन्दुस्तान' ही है जिसका उल्लेख कम मिलता है। इसके प्रथम अनूदित ग्रन्थ में इसका नाम 'द माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' ही मिलता है। फिर भी, इस पुस्तक में सर्वप्रथम कालक्रमानुसार नामकरण के साथ प्रवृत्तियों के आधार पर विभाजन किया गया है।*

कुंजीभूत शब्द– प्रथम इतिहास, साहित्येतिहास, अनूदित ग्रन्थ, विभाजन, प्रचारक, स्मरण, विचरित हिन्दी साहित्य।

ग्रियर्सन ने 951 कवियों का जीवनवृत्त देते हुए उनकी रचनाओं और काव्य सम्बन्धी विषयों को भी व्याख्यापित किया है। चारण काव्य, धार्मिक काव्य, प्रेमकाव्य एवं दरबारी काव्य के रूप में विभाजित ढाँचा के अनुरूप केवल हिन्दी कवियों को स्थान दिया गया है। 'द माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' की मूल प्रेरणा 'प्राच्य विशारदों की अन्तर्राष्ट्रीय सभा – वियना (आस्ट्रिया) अधिवेशन' में तुलसी के सन्दर्भ में हिन्दुस्तान के मध्यकालीन भाषा साहित्य पर लेख के निमित्त एकत्र हुई विपुल सामग्री से मिली थी। 'द माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' सन् 1888 ई. में 'रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल' के जर्नल में प्रथम बार प्रकाशित हुआ, परन्तु इसका स्वतन्त्र पुस्तक के रूप में प्रकाशन 1889 ई. में हुआ था। कालान्तर में, जिसका अनुवाद डॉ. किशोरीलाल गुप्त ने 'हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास' नाम से किया है और यह सन् 1957 ई. में हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी से प्रकाशित हुआ है। तुलसी साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान, भाषा वैज्ञानिक डॉ. ग्रियर्सन साहब को हिन्दी साहित्य की अप्रतिम सेवा के लिए सदैव स्मरण किया जायेगा । उनके द्वारा विरचित–हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास अधिक वैज्ञानिक–पूर्ण, कालबद्ध एवं क्रमबद्ध रूप में विश्लेषणात्मक पद्धति में लिखा गया है। इतना ही नहीं, ये भारतीय भाषाओं के प्रथम भाषा वैज्ञानिक–सर्वेक्षक हैं, जिन्होंने कैथी लिपि को देवनागरी लिपि के समकक्ष समानता प्रदान की थी।

डॉ. ग्रियर्सन हिन्दी के लिए पाश्चात्य देशों के विद्वानों में अग्रगण्य हैं जिनका तीन साहित्यिक योगदान – 'द माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान, भारतीय भाषा सर्वेक्षण तथा तुलसी के रामचरितमानस का पहली बार वैज्ञानिक सम्पादन भारतीयों के लिए चिरस्मरणीय रहेगा।' इन्होंने तुलसी पर दशाधिक शोध–पत्र प्रस्तुत किया है। हिन्दी और उर्दू को पृथक् करने का श्रेय जार्ज ग्रियर्सन को ही दिया जाना चाहिए क्योंकि उनकी मान्यता थी कि उर्दू पश्चिमी हिन्दुस्तान के शहरों में मुसलमानों तथा फारसी संस्.त से प्रभावित हिन्दुओं द्वारा बोली जाती है। किन्तु उन्होंने इतिहास ग्रन्थ के शीर्षक 'हिन्दुस्तान' शब्द को 'हिन्दी भाषा और प्रदेश' के अर्थ में ही प्रयोग किया है जिसमें 951 वर्णित कवियों का विवरण मारवाड़ी, ब्रज, अवधी, बिहारी के क्षेत्र में लिखित साहित्य को सम्मिलित किया है। यहाँ उल्लेख कर देना उचित होगा कि कुल कवियों की गणना पुस्तक के अन्त में 952 उल्लिखित है, परन्तु इसमें 951 कवि ही हैं क्योंकि अध्याय 11 के अन्तर्गत संख्या 706 पर किसी कवि का परिचय नहीं है, अपितु 'बिहारी और हिन्दी नाटकों पर टिप्पणी' उल्लिखित है।' यद्यपि प्रस्तावना में स्वयं ग्रियर्सन ने 952 कवियों की परिचर्चा की है – "भाषा साहित्य के उन समस्त लेखकों की सूची मात्र न होने के अतिरिक्त यह ग्रन्थ और कुछ होने का दावा नहीं करता, जिनका नाम मैं एकत्र कर सका हूँ और जो संख्या में 952 हैं तथा जिनमें कुछ सत्तर का ही उल्लेख गार्सा द तासी ने अपने 'इस्त्वार द ल लित्रेत्यूर ऐन्दुई ए ऐन्दुस्तानी' में इसके पहले किया है।"[2]

उन्होंने अपने ग्रन्थ की भूमिका में अट्ठारह ग्रन्थों से सहयोग लेने की .तज्ञता प्रकट की है। उन्होंने उसके विषय में लिखा है – 'नीचे उन काव्य–संग्रहों तथा अन्य ग्रन्थों की सूची दी जा रही है, जो प्रस्तुत ग्रन्थ के आधार हैं –

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

सं.	संग्रह नाम	संक्षिप्त रूप	संग्रहकर्त्ता का नाम	तिथि
1.	भक्तमाल भक्त	नाभाजीदास	(सं. 51)	1550 ई. के लगभग
2.	गोसाईं चरित्र	गोस्वामी बेनीमाधवदास	(सं. 130)	1600 ई. के लगभग
3.	कविमाला	माल. तुलसी	(सं. 153)	1655 ई.
4.	हजारा हज.	कालिदास त्रिवेदी	(सं. 159)	1718 ई.
5.	काव्यनिर्णय	निर. भिखारीदास	(सं. 344)	1725 ई. के लगभग
6.	सत्कविगिराविलास सत.	बलदेव	(सं. 359)	1746 ई.
7.	सूदन द्वारा प्रशंसित	कवि सूची सू.सूदन	(सं. 367)	1750 ई. के लगभग
8.	विद्वन्मोदतरंगिणी विद्.	सुब्बा सिंह	(सं. 590)	1817 ई.
9.	रागसागरोद्भवरागकल्पद्रुमराग	कृष्णानंद व्यासदेव	(सं. 638)	1843 ई.
10.	शृंगार संग्रह	शृ. सरदार	(सं. 571)	1848 ई.
11.	भक्तमाल का उर्दू अनुवाद	उ.भ.तुलसीदास	(सं. 640)	1854 ई.
12.	रसचन्द्रोदय	रस.ठाकुर प्रसाद	(सं. 570)	1863 ई.
13.	दिग्विजय भूषण दिग.	गोकुल प्रसाद	(सं. 694)	1868 ई.
14.	सुन्दरी तिलक	सुं. हरिश्चन्द्र	(सं. 581)	1869 ई.
15.	काव्य संग्रह काव्य.	महेशदत्त	(सं. 696)	1875 ई.
16.	कवित्त रत्नाकरकवि.	मातादीन मिश्र	(सं. 698)	1876 ई.
17.	शिवसिंह सरोज शिव.	शिवसिंह सेंगर	(सं. 595)	1883 ई.
18.	विचित्रोपदेश विचि.	नकछेदी तिवारी		1887 ई.[3]

ग्रियर्सन ने इस तालिका को प्रस्तुत करके अपनी ईमानदारी के साथ एक आभार भी प्रकट किया है। इस तालिका के साथ ग्रियर्सन ने टॉड के 'राजस्थान का इतिहास' और गार्सा द तासी के 'इस्तवार द–ल–लित्रेत्यूर ऐन्दुई ऐ ऐन्दुस्तानी' से भी कम परिचय व सहायता नहीं प्राप्त किया था। इन सहायक ग्रन्थों में कुछ कवियों के परिचय देने में 'हिन्दी और हिन्दुस्तानी संग्रह की भूमिका' – विलियम प्राइस तथा 'ए स्केच ऑफ द रिलिजस सेक्ट्स ऑफ द हिन्दूज' की भी अहम् भूमिका है। डॉ. आशा गुप्त ने 'डॉ. ग्रियर्सन के साहित्येतिहास' नामक पुस्तक में ग्रियर्सन से पूर्व इन दो पुस्तकों का भी विवरण दिया है।[4] फोर्ट विलियम के प्रो. विलियम प्राइस ने 1827 ई. में तारणीचरण मित्र से 'हिन्दी एण्ड हिन्दुस्तानी सेलेक्सन्स' नामक पुस्तक लिखवाया था, जिसमें दो भाग हैं – प्रथम भाग के गद्य–पद्य संग्रह में– 'बैताल पच्चीसी, भक्तमाल से चरित्र संग्रह, कबीर के रेखते, सुन्दरकाण्ड (तुलसी मानस), सरस शैली में हास्यरस की कहानियाँ, हिन्दुओं के लोकगीत हैं। दूसरे भाग में– लल्लूजीलाल के प्रेमसागर के साथ शब्दकोश है। इसके विषय में डॉ. आशा गुप्त लिखती हैं – "उसमें अनायास हिन्दी साहित्येतिहास की एक क्षीण–सी रूपरेखा भी उभर आयी। क्योंकि एक तो काल–विस्तार की दृष्टि से दसवीं से सत्रहवीं शताब्दी तक इतिहास समेट लिया गया है। दूसरे प्रत्येक शताब्दी के प्रमुख कवियों का नामोल्लेख कालक्रम से रखा गया है।"[5] इसी पुस्तक में दूसरे ग्रन्थ का उल्लेख – 'ए स्केच ऑफ द रिलिजस सेक्ट्स ऑफ द हिन्दूज' भी है। 1828 से 32 के बीच जनरल एशियाटिक रिसर्चेज में छपे निबन्ध संग्रह की भूमिका एच. विलसन ने 206 पृष्ठों में लिखा है। यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें हिन्दुओं के विभिन्न सम्प्रदायों एवं पंथों का विश्लेषण दिया गया है और वैष्णव सम्प्रदाय के वर्तमान स्वरूप पर भी प्रकाश डाला गया है।

'सरोज' की प्रशंसा में स्वयं ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक की भूमिका में लिखा है – "एक देशी ग्रन्थ पर मैं अधिकांश में निर्भर रहा हूँ और प्रायः सभी छोटे कवियों और अनेक प्रसिद्ध कवियों के भी सम्बन्ध में प्राप्त सूचनाओं के लिए जिसका मैं ऋणी हूँ, शिवसिंह द्वारा विरचित और मुंशी नवलकिशोर द्वारा प्रकाशित अत्यन्त लाभदायक 'शिवसिंह सरोज' (द्वितीय संस्करण 1883 ई.) है।"[6] इस पर ग्रियर्सन के विश्वास को देखा जा सकता है – "उन्होंने आश्रयदाताओं का भी प्रायः उल्लेख किया है और जब कभी इनकी पूर्ण पहचान हो गई है, उन्होंने अत्यन्त उपयोगी सूत्र दिये हैं। जब सभी उपाय असफल सिद्ध हुए, अनेक बार सरोज ही मेरा पथ–प्रदर्शक रहा है। शिवसिंह बराबर तिथियाँ देते गये हैं और मैंने उनको सामान्यतया प्रयाप्त ठीक पाया है।"[7] इस प्रकार 951 कवियों के परिचय के लिए 886 कवियों का परिचय 'शिवसिंह सरोज' से लिया गया है। ग्रियर्सन ने शेष 65 कवियों दोनों पूर्ववर्ती अंग्रेजी पुस्तकों व उपर्युक्त तालिका के ग्रन्थों से ग्रहण किया है। यद्यपि डॉ. किशोरीलाल गुप्त ने केवल पाँच ही ग्रन्थों को सहायक माना है – 1. राग कल्पद्रुम, 2. शृंगार संग्रह, 3. सुन्दरी तिलक, 4. शिवसिंह सरोज, 5. विचित्रोपदेश।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

डॉ. किशोरीलाल गुप्त ने 'अन्तर्दर्शन' के अन्तर्गत 'सरोज का आभार' शीर्षक से सरोज और ग्रियर्सन के कवियों के तिथि, समय और संख्याओं का विहंगम तुलना प्रस्तुत किया है।[8]

'द माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' में सर्वप्रथम इतिहास के दोनों तत्व – इतिवृत्तात्मकता एवं प्रवृत्त्यात्मकता मिलती है। अतएव यह इतिहास लेखन का प्रथम प्रयास है। ग्रियर्सन को हिन्दी साहित्येतिहास का स्पष्ट बोध था, जिन्होंने कालक्रमानुसार काल विभाजन और नामकरण किया है। इसके साथ कतिपय साहित्यिक प्रवृत्तियों का प्रथम बार उद्घाटन करने का श्रेय डॉ. ग्रियर्सन को दिया जाता है, जिन्होंने अपने बारह अध्यायों में चारणकाल, रीतिकाव्य के साथ गौण प्रवृत्तियों यथा – धार्मिक पुनरुत्थान, प्रेमकाव्य, कृष्ण सम्प्रदाय क्रमशः भक्ति, प्रेममार्ग और कृष्ण भक्ति सम्प्रदाय का आगे स्पष्ट परिचय मिलता है। कवि कालक्रम और काल विभाजन के कारण ग्रियर्सन के 'द माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' को डॉ. किशोरीलाल गुप्त ने अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करते हुए इसका नाम 'हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास' रखा। ग्रियर्सन ने हिन्दी साहित्य को इन कालों में विभाजित किया है .

"चारणकाल (700 –1300 ई.)
पन्द्रहवीं शती का धार्मिक पुनर्जागरण
मलिक मुहम्मद जायसी की प्रेम कविता
ब्रज का कृष्ण सम्प्रदाय (1580 – 1592 ई.)
तुलसीदास के अन्य परवर्ती (1600 – 1700 ई.)
अठारहवीं शताब्दी
कम्पनी के शासन में हिन्दुस्तान
महारानी विक्टोरिया के शासन में हिन्दुस्तान।"[9]

डॉ. शिवकुमार ने ग्रियर्सन के इतिवृत्तात्मकता की लेखन शैली पर लिखा है – "वे पहले इतिहासकार हैं, जिन्होंने हिन्दी साहित्य के कालों को विभाजित किया तथा कुछ कालखण्डों का नामकरण भी किया।"[10] ग्रियर्सन ने कालों का वर्गीकरण के साथ प्रवृत्तियों, सामाजिक स्थितियों तथा कवियों का तुलनात्मक आलोचना करते हुए अपना इतिहास ग्रन्थ लिखा है। उसके साहित्यिक प्रवृत्तियों पर एक नजर देखिए – "सोलहवीं शती के अन्तिम काल एवं सम्पूर्ण सत्रहवीं शती ने, जो मुगल साम्राज्य के आधिपत्य काल का प्रायः संगति है, काव्य प्रतिभा की एक असाधारण श्रेणी ही प्रस्तुत कर दी है। इस युग के अत्यन्त प्रसिद्ध कवि जिनका विवरण पहले नहीं आया है, केशवदास, चिन्तामणि त्रिपाठी और बिहारीलाल हैं। केशवदास और चिन्तामणि काव्यशास्त्र लिखने वाले उस कवि सम्प्रदाय के सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रतिनिधि हैं, जिसकी स्थापना केशव ने की और जो काव्य–कला के शास्त्रीय पक्ष का ही निरन्तर विवेचन करता रहा।"[11]

ग्रियर्सन की भूमिका से उसकी विचारणा प्रकट हो जाती है, जिसमें इतिहास लिखने के अवसर और आवश्यकता, सूचना सूत्र, विषय–विन्यास का सिद्धान्त, हिन्दी भाषा–भाषी क्षेत्र के भाषा–साहित्य का संक्षिप्त विवरण, चित्र परिचय, शुद्धिपत्र तथा परिशिष्ट आदि का उल्लेख मिलता है। उसके समग्र इतिहास की रूपरेखा को जानने के लिए उनके अध्यायों के विभाजन को जानना आवश्यक हो जाता है जिसने 12 अध्यायों में इतिहास की विवेचना की है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वही – पृ.41
2. वही – पृ.46–47
3. डॉ. आशा गुप्त – डॉ. ग्रियर्सन के साहित्येतिहास – पृ.4
4. वही – पृ.5
5. डॉ. किशोरीलाल गुप्त – हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास – पृ.45
6. वही – पृ.46
7. वही – पृ.35
8. वही – पृ. विषय–सूची
9. डॉ. शिवकुमार – हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्शन – पृ.170
10. डॉ. किशोरीलाल गुप्त – हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास –पृ0 151
11. वही – पृ.24–251

*****